Teacher Today
नया शिक्षक

Vol. 56 | No. 1 | January-March 2014

संरक्षक
वसुंधरा राजे
मुख्य मंत्री, राजस्थान
कालीचरण सराफ
शिक्षा मंत्री, राजस्थान

PATRON
Vasundhara Raje
Chief Minister, Rajasthan
Kalicharan Saraf
Education Minister, Rajasthan

प्रधान सम्पादक
विकास एस. भाले

Editor-in-chief
Vikas S. Bhale

वरिष्ठ सम्पादक
ओम प्रकाश सारस्वत

Senior Editor
Om Prakash Saraswat

सहायक
सुनीता चावला
मुकेश व्यास
रमेश व्यास

Assistant
Sunita Chawla
Mukesh Vyas
Ramesh Vyas

सलाहकार मण्डल
नरेश पाल गंगवार
शिव रतन थानवी
भवानी शंकर व्यास
भगवती लाल व्यास

Advisory Board
Naresh Pal Gangwar
Shiv Ratan Thanvi
Bhawani Shankar Vyas
Bhagwati Lal Vyas

आवरण पृष्ठ डिजाइन
अविनाश कुमावत

Cover Design
Avinash Kumawat

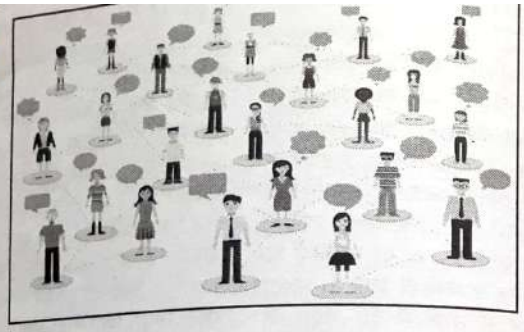

सामाजिक संजाल एवं भारतीय-मूल्य

• डॉ. गिरिराज भोजक

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर ही वह परस्पर अन्तःक्रिया के माध्यम से विकास के नवीन आयामों को आत्मसात् करते हुए निरंतर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफलता प्राप्त कर रहा है। भारतीय चिंतन में सदैव एकाकी, आत्म केन्द्रित एवं स्वार्थपरता से परे सम्पूर्ण विश्व को एक समाज मानकर 'वसुधैव कुटुम्बकम' के आदर्श वाक्य को जीवन मूल्य बनाकर 'सर्वे भवन्तु सुखिन....' की संकल्पना का अनुसरण किया गया है। भारतीय संस्कृति का चिरकालीन सातत्य एवं इसकी 'विश्व गुरु' रूपी मान्यता के साथ जुड़े हैं उदारवादी, सह अस्तित्वपरक एवं समन्वयशील सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्य।

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज के अनुसार मूल्य से तात्पर्य है, 'रुचियाँ, आनंद, पसंद, कर्तव्य, नैतिक उत्तरदायित्व, आवश्यकताएं एवं कई प्रकार के सामाजिक झुकाव के तरीके।' आर. के. मुखर्जी ने 'मूल्यों को सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य उन इच्छाओं तथा लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किया है जिन्हें अनुबन्धन, अधिगम या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आभ्यन्तरीकृत किया जाता है तथा जो आत्मनिष्ठ प्राथमिकताओं, मानकों तथा आकांक्षाओं का रूप ग्रहण कर लेती है।'

किसी भी व्यक्ति के समाजीकरण की आधारभूत एवं महत्वपूर्ण इकाई है परिवार जहाँ एक

बालक अनुसार के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मूल्यों प्रेम, सहानुभूति, आदर, सहिष्णुता, विवेक, कर्तव्य, अधिकार आदि का अधिगम करता है। पारिवारिक संबंधों के निर्वहन में आत्मसात किये गये मूल्य अधिक स्थाई होते हैं। फ्रायड एवं एडलर ने व्यक्तित्व निर्माण में तादात्म्यीकरण और आभ्यन्तरीकरण की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण माना है। पारिवारिक मूल्यों के विघटन एवं गिरते स्तर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा रचित पुस्तक 'फैमिली एण्ड नेशन' में गलन चिंतन करते हुए पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों को राष्ट्र निर्माण में अतिमहत्वपूर्ण माना है। सामाजिक मूल्यों की सापेक्षिकता के दृष्टिकोण में मूल्य परिवर्तनशीलता को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। भारतीय समाज भी अन्य समाजों के समान परिवर्तनशील है तथा किसी भी समुदाय में होने वाले परिवर्तनों का सापेक्ष या निरपेक्ष रूप से उसके परम्परागत मूल्यों पर प्रभाव परिलक्षित होता है। अतः सामाजिक मूल्यों से जुड़े विविध घटकों को मुख्यतः दो बिन्दुओं के अन्तर्गत विचार किया जा सकता है-

(अ) सामाजिक मूल्यों की सापेक्षकता या उससे संबंधित समस्याएँ

(ब) सामाजिक मूल्य ह्रास के कारण एवं समाधान

युग परिवर्तनकारी घटनाओं के प्रकाश में हम भारतीय समाज को देखने पर पाते हैं कि आज समाज का प्रत्येक वर्ग किसी न किसी रूप में निम्नलिखित घटकों से प्रभावित नजर आता है जिनके परिणामस्वरूप या तो समस्याएं उत्पन्न हो गई है या उन्हें समस्या मान लिया गया है वे घटक हैं-

1. बढ़ता वैश्वीकरण
2. तकनीकी एवं वैज्ञानिक संसाधनों की सुलभता
3. अस्तित्वपरक प्रतियोगितावाद
4. पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव
5. एकाकी जीवनशैली एवं आत्म केन्द्रितता

उपर्युक्त घटकों के परिणामस्वरूप हमारे समाज में परस्पर संबंधों का संजाल हमारी पूर्व अपेक्षित संकल्पना पर खरा नहीं उतर रहा है और हम अनेक सामाजिक विसंगतियों से घिरते जा रहे हैं। हमारे देश के सभी भागों में बढ़ती हिंसा, यौन उत्पीड़न (पुरुष एवं महिला), चोरी, डकैती, सांप्रदायिकता, धर्मान्धता, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं को हम उपर्युक्त घटकों के प्रकाश में देख सकते हैं।

इन्हीं घटकों में से एक है तकनीकी एवं वैज्ञानिक साधनों की सुलभता जिसके मिश्रित प्रभाव हमारे सामाजिक तंत्र पर परिलक्षित हैं। इन साधनों ने शिक्षा एवं संस्कृति के संचयन, प्रसार एवं हस्तांतरण का महनीय कार्य किया है जिसके फलस्वरूप आज सम्पूर्ण विश्व समुदाय एक वैश्विक गांव के रूप में उभरता जा रहा है। शिक्षा एवं तकनीकी के साधन इंटरनेट द्वारा विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से व्यक्तिशः विचार-विनिमय का एक साधन 'सामाजिक संजाल' के रूप में तेजी से उभरा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता की होड़ में भागते प्रतियोगितावादी युग में अस्तित्व की खोज करते एक व्यक्ति के लिए ये माध्यम है अपने विचारों को व्यक्त करने का, परस्पर जुड़ने एवं संबंध बनाने का। यह सर्वविदित है कि समय की मांग मूल्य परिवर्तनकारी है। सामाजिक संजाल ने हमारे परंपरागत सामाजिक मूल्यों को सिक्के के दो पहलुओं के समान प्रभावित किया है, जो निम्नलिखित है-

सकारात्मक प्रभाव :

- बढ़ता वैश्वीकरण
- ज्ञान-विज्ञान विनिमय
- सांस्कृतिक हस्तांतरण
- संस्थागत या सामुदायिक समन्वय
- नवाचारों का प्रचार-प्रसार

नकारात्मक प्रभाव :

- संकुचित पारिवारिक एवं मानवीय मूल्य
- संबंधों में व्यावहारिकता का ह्रास
- स्वास्थ्य एवं आरोग्यता ह्रास
- बढ़ता विद्युत उपभोग

समग्र रूप से किसी भी उपलब्ध सुविधा या